''षिक्षा की समस्या, जीवन विज्ञान समाधान''

लाडनूं, 17 मई।

शिक्षा का विकास हुआ है और हो रहा है, शिक्षा के विकास के साथ हिंसा, आवेग और असंतुलन की समस्या भी बढी है। कर्णाटक जीवन विज्ञान अकादमी ने केन्द्रीय जीवन विाान अकादमी जैन विश्व भारती के साथ संयुक्त कार्यक्रम समायोजित किया गया है। जिसमें आचार्यश्री महाप्रज्ञ एवं युवाचार्यश्री महाश्रमण के साथ मैसूर के प्रसिद्ध संत शिवरात्रिश्वरदेशीकेन्द्र महास्वामी का विशेष वक्तव्य ''शिक्षा की समस्या जीवन विज्ञान समाधान'' विषय पर दिशा निर्देशन होगा है। ज्ञातव्य है कि शिक्षा की अपूर्णता को दृष्टिगत रखते हुए आचार्य महाप्रज्ञ ने जीवन विज्ञान के रूप में अभिनव शिक्षा प्रकल्प प्रस्तुत किया है। जिसका समावेश राजस्थान के प्रायः सभी विश्वविद्यालयों एवं देशभर में अनेक शिक्षण केन्द्रों में हो चुका है तथा विद्यार्थी एवं शिक्षक वर्ग इससे लाभान्वित हो रहा है।

कर्नाटक जीवन विज्ञान अकादमी भी दूरस्थ क्षेत्र में कार्य कर रही है। वहां के शिवरात्रिश्वर महास्वामी जीवन विज्ञान गतिविधियों से प्रभावित होकर आचार्य महाप्रज्ञ से मिलने आज (18 मई) लाडनूं आ रहे हैं। इन दो महान व्यक्तित्वयों का मिलन शिक्षा के क्षेत्र में एक महत्त्वपूर्ण पड़ाव सिद्ध होगा।

'रहस्य पुनर्जन्मों के' पुस्तक का विमोचन 19 को

लाडनूं, 17 मई।

प्रेक्षाप्राध्यापक मुनिश्री किशनलालजी की सद्यः प्रकाशित कृति 'रहस्य पुनर्जन्मों के' का विमोचन 19 मई को सुधर्मा सभा में आचार्यप्रवर एवं युवाचार्यप्रवर के पावन सान्निध्य में होगा। पुस्तक लोकार्पण समारोह में 'अहा! जिन्दगी' के संपादक यशवन्त व्यास विशेष रूप से उपस्थित होंगे।

इस पुस्तक का प्रकाशन 'अहा! जिन्दगी' के माध्यम से हुआ है। अतः इस अवसर पर श्री व्यास प्रकाशकीय वक्तव्य देंगे। जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय के दूरस्थ शिक्षा विभाग के उपनिदेशक डॉ. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी पुस्तक परिचय प्रस्तुत करेंगे। पुस्तक के लेखक मुनि किशनलालजी पुस्तक लेखन के अपने अनुभवों की प्रस्तुति देंगे। इस अवसर पर आचार्यश्री महाप्रज्ञ एवं युवाचार्यश्री महाश्रमण के प्रेरक प्रवचन होंगे।

''वायुकाय की हिंसा से बचें''

– युवाचार्यश्री महाश्रमण

लाडनूं, 17 मई।

युवाचार्यप्रवर ने सुधर्मा सभा में प्रवचनसभा को संबोधित करते हुए फरमाया कि वायुकाय पांच स्थावरों में एक मात्र ऐसा काय है जो दिखाई नहीं देता है और सब चीजें दिखाई देने वाली है। सुगंध आंख से दिखाई नहीं देती उसका विषय घ्राणेन्द्रिय है, इसलिए घ्राणेन्द्रिय के आधार पर उसके अस्तित्व को स्वीकार किया जाता है।

युवाचार्यश्री ने वायुकाय के प्रकारों की चर्चा करते हुए कहा कि वायुकाय के दो प्रकार है – सूक्ष्म वायुकायिक और बादर वायुकायिक है। इन दोनों के भी पर्याप्त और अपर्याप्त के रूप में दो–दो भेद होते हैं।

युवाचार्यश्री ने फरमाया कि साधु जीवों के माता के समान है। उसके द्वारा किसी भी जीव की हिंसा नहीं हो इसका ध्यान रखा जाता है। इसीलिए वायुकाय की हिंसा से बचने का विधान साधु चर्या में किया गया है। इस अवसर पर मुनि किशनलाल ने प्रेक्षाध्यान के प्रयोग करवाए। कार्यक्रम का संचालन मुनि मोहजीत कुमार ने किया।

अशोक सियोल
99829 03770